पंजाब केसरी २२/०२/२०२५

वैचारिक संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्यार्थी प्राचार्य डा. रोहित दत्त के साथ। (चंद्रमोहन)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमें संस्कारों, परंपराओं एवं भाषीय गौरव के साथ जोड़ती है : डा. रोहित दत्त

वैचारिक संगोष्ठी में विद्यार्थियों ने मातृभाषा व नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर रखे विचार

अम्बाला, 21 फरवरी (बलराम): गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज के हिंदी विभाग एवं राष्ट्रभाषा विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने मातृभाषा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अलग-अलग प्रांतों के विद्यार्थियों ने अपनी मातृभाषा नागामीज (नागालैंड), नेपाली, हरियाणवीं एवं पंजाबी में मातृभाषा के प्रति अपने स्नेहपूर्ण उद्गारों को अभिव्यक्त किया।

अपने संबोधन में कॉलेज प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में मातृभाषाएं पुन: पल्लवित एवं सुवासित हो रही हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमें हमारे संस्कारों, परंपराओं एवं भाषीय गौरव के साथ जोड़ती है। हिंदी विभागाध्यक्ष डा. रितु गुप्ता ने कहा कि मातृभाषाएं और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आज का ज्वलंत विषय है। मातृभाषाओं का कभी लोप नहीं होता। मातृभाषाएं सदैव व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिष्कृत करती हैं।

डा. राजेंद्र देशवाल ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कैनवस पर सभी भाषाएं पुन: खिल उठती हैं। ज्ञान-विज्ञान की भाषाएं मातृभाषा में जितनी समृद्ध होंगी, उतना ही हम ज्ञान में समृद्ध हो सकते हैं। डा. अनीश ने कहा कि हमें सभी मातृभाषाओं का सम्मान करना चाहिए। मातृभाषा व्यक्ति की मुख मंडल की आभा एवं तेजस्विता में वृद्धि करती है।

संगोष्ठी में विद्यार्थियों ने मातृभाषा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बताया कि मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना सर्वोत्तम है। ज्ञान की सशक्त पूंजी हमें मातृभाषा से ही मिल सकती है। इस वैचारिक संगोष्ठी में 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया।